केंद्रीय विद्यालय संघठन
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,मैसूरु

नई हिंदी पाठ्यपुस्तक पर मास्टर प्रशिक्षकों का अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम पर 3- दिवसीय कार्यशाला (22-7-2025 से 24-07-2025)

हिंदी पाठ्य पुस्तकों एवं शिक्षण उद्देश्य

नई हिंदी पुस्तकों पर आधारित शिक्षण पद्धतियां

मूल्य,कला और जीवन कौशल

नई पाठ्य पुस्तक में प्रौद्योगिकी का प्रयोग

भाव , भाषा और अभिव्यक्ति

कल्पनाशीलता का विकास

संरक्षक

	पाठ्यक्रम निदेशक **सुश्री मीनाक्षी जैन** **उपयुक्त एवं निदेशक ,** **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान , मैसूरु**
	प्रशिक्षण सह - निदेशक **श्रीमती पिंकी देवी , टीजीटी हिंदी** **केंद्रीय विद्यालय वाल्टेयर**
	पाठ्यक्रम समन्वयक **डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह , प्रशिक्षण सहयोगी (हिंदी)** **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान , मैसूरु**
	संसाधक **श्रीमती आरती राठौर , टीजीटी हिंदी** **पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मैसूरु**
	संसाधक **श्रीमती एस एस शालिनी** **पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय एच ए पी पी त्रिची**
	संसाधक **श्री दिनेश कुमार** **प्रशिक्षण सहयोगी (भौतिकी)** **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान , मैसूरु**

प्रतिभागी

क.स.	प्रतिभागी का नाम	पद	विद्यालय का नाम	संभाग
1	उपदेश मीणा	टीजीटी हिंदी	के वी	बेंगलुरु
2	त्रिभुवन पुनेठा	टीजीटी हिंदी		बेंगलुरु
3	नीता कारेकर	टीजीटी हिंदी		बेंगलुरु
4	अल्का रस्तोगी	टीजीटी हिंदी		बेंगलुरु
5	लक्ष्मण सिंह	टीजीटी हिंदी	के वी एएफएस येलाहंका	बेंगलुरु
6	कंचन रानी	टीजीटी हिंदी	के वी एनएएल बेंगलुरु	बेंगलुरु
7	महेंद्र कुमार	टीजीटी हिंदी		बेंगलुरु
8	उषा	टीजीटी हिंदी	के वी एमइजी & सेंटर	बेंगलुरु
9	इंद्र सहाय माली	टीजीटी हिंदी		बेंगलुरु
10	ऋचा श्रीवास्तव	टीजीटी हिंदी		बेंगलुरु
11	श्वेता गुप्ता	टीजीटी हिंदी	के वी अन्नानगर	चेन्नई
12	नलिनी राय	टीजीटी हिंदी	के वी सीआरपीएफ ,	चेन्नई
13	प्रमिला वर्मा	टीजीटी हिंदी	के वी सीएलआरआई	चेन्नई
14	मीना राजू	टीजीटी हिंदी	के वी मीनामबक्कम	चेन्नई
15	बी. एस.यादव	टीजीटी हिंदी	के वी न. 1 ताम्ब्रम	चेन्नई
16	अंकिता यादव	टीजीटी हिंदी	के वी न. 1	चेन्नई

			कलपक्कम	
17	प्रियंका	टीजीटी हिंदी	के वी न. 1 मदुरै	चेन्नई
18	श्रीश कुमार	टीजीटी हिंदी	के वी न.2 मदुरै	चेन्नई
19	उपेन्द्र कुमार	टीजीटी हिंदी	के वी नागरकोइल	चेन्नई
20	सीमा सिंह	टीजीटी हिंदी	के वी नेवेली	चेन्नई
21	शैना के.वी.	टीजीटी हिंदी	के वी पेरिंगोमे	एर्नाकुलम
22	शीबा एन.	टीजीटी हिंदी	के वी केल्त्रों नगर	एर्नाकुलम
23	के. येलायुधान	टीजीटी हिंदी	के वी कन्नूर	एर्नाकुलम
24	के.एम. यूनिकृष्णन	टीजीटी हिंदी	के वी रामावर्मापुरम	एर्नाकुलम
25	अनुबाला	टीजीटी हिंदी	के वी न. 1 नवल बेस	एर्नाकुलम
26	के. सुनीता	टीजीटी हिंदी	के वी न. 2 नवल बेस	एर्नाकुलम
27	कार्तिका एस. नायर	टीजीटी हिंदी	के वी अडूर	एर्नाकुलम
28	लतिका रानी एल.	टीजीटी हिंदी	के वी कोल्लम	एर्नाकुलम
29	आर. दीप्ति	टीजीटी हिंदी	के वी पत्तोम	एर्नाकुलम
30	एम. एस. निम्मी	टीजीटी हिंदी		एर्नाकुलम
31	रितु मान	टीजीटी हिंदी	के वी बोलारम	हैदराबाद
32	डूंगर सिंह मीणा	टीजीटी हिंदी	पीएम श्री के वी कडपा	हैदराबाद
33	नितीश कुमार मिश्रा	टीजीटी हिंदी	के वी महबूबनगर	हैदराबाद
34	दिलीप कुमार डांगे	टीजीटी हिंदी	के वी मंचेरिआल	हैदराबाद
35	महेश कुमार नेहरा	टीजीटी हिंदी	के वी नलगोंडा	हैदराबाद
36	संतोष देवी	टीजीटी हिंदी	के वी न.2 नौसेनाबाग़	हैदराबाद
37	सुनील कुमार	टीजीटी हिंदी	के वी नेल्लोर	हैदराबाद

38	मधुलिका यादव	टीजीटी हिंदी	के वी शिवरामपल्ली	हैदराबाद
39	नीता	टीजीटी हिंदी	के वी सिर्सिल्ला	हैदराबाद
40	पूजा नगरवाल	टीजीटी हिंदी	के वी वारंगल	हैदराबाद

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,मैसूरु

नई हिंदी पाठ्यपुस्तक पर मास्टर प्रशिक्षकों अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम पर कार्यशाला

(22-7-2025 से 24-07-2025)

कार्यशाला प्रतिवेदन

तीन दिवसीय नई पुस्तक अभिमुखी कार्यक्रम ZIET मैसूर में उपायुक्त महोदया सुश्री मीनाक्षी जैन की अध्यक्षता में दि. 22/07/25 से 24/07/25 तक होना सुनिश्चित हुआ. कार्यक्रम का प्रारंभ प्रार्थना सभा के साथ हुआ. कार्यक्रम संचालक डॉ. विरेन्द्र कुमार ने किया और उपायुक्त महोदया ने अपने आशीर्वचनों से सभी को अनुग्रहित किया। इसके पश्चात डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कार्यशाला को आगे बढ़ाया। शुरुआत में सह निदेशिका श्रीमती पिंकी देवी ने तीन दिवसीय कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

पहला दिवस प्रथम सत्र

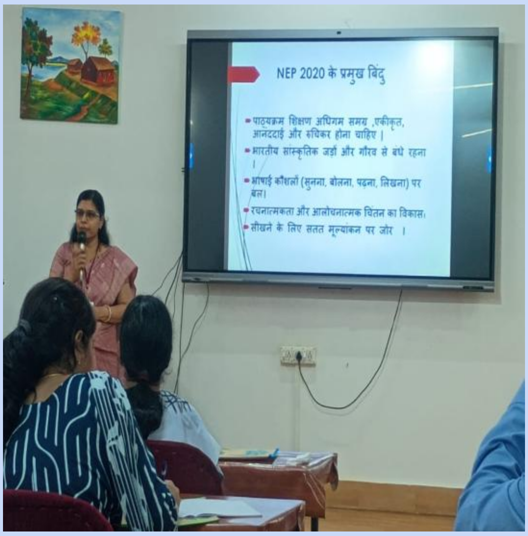

जिसमें श्रीमती पिंकी देवी ने हिंदी पाठ्य पुस्तकों का परिचय देते हुए कार्यशाला का प्रारंभ किया

विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तकों का परिचय एवं शिक्षण उद्देश्य

प्रस्तुतकर्ता: श्रीमती पिंकी देवी, टीजीटी हिंदी
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय वाल्टेर, हैदराबाद संभाग

'मल्हार' पाठ्यपुस्तक का शाब्दिक परिचय देते हुए मल्हार राग और हिंदी पाठ्यपुस्तक की समान विशेष ताओं से अवगत कराया। मल्हार पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य बताते हुए महोदया ने बताया कि इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य केवल भाषा ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन कौशल, नैतिक मूल्यों और समग्र विकास को बढ़ावा देना है। ये पुस्तकें संवादात्मक, अनुभव आधारित, और बहु-माध्यमीय हैं। इनमें लोककथाएं, दृश्य-श्रव्य सामग्री, कविता, नाटक आदि शामिल हैं।

NCF 2023 के अनुसार, ये पुस्तकें स्थानीयता, मूल्यों, और विषयों के एकीकरण पर आधारित हैं। 'मल्हार' पुस्तक विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक चेतना विकसित करने का माध्यम है।

द्वितीय सत्र

प्रस्तुत कर्ता -आरती राठौर*

नई हिंदी पाठ्यपुस्तकों पर आधारित शिक्षण पद्धतियां

महोदया ने अपनी बात दक्षता से प्रारंभ की

ज्ञान + कौशल + मनोवृत्ति = दक्षता

मल्हार के तीन स्तंभ बताए-

1- संपर्क – पूर्व, ज्ञान से जोड़ना

2- प्रयोग-भाषा का सक्रिय उपयोग

3- अनुशीलन – चिंतन, अभ्यास और आत्ममूल्यांकन

शिक्षण रणनीतियाँ

1- पूर्व-पाठ, पाठ्य-अवधि, पाठ्ेतर गतिविधियाँ

2-अंतर विषयी दृष्टिकोण

3- बहु-बुद्धिमत्ता आधारित विधियाँ।

मल्हार की खास बात से परिचित कराया

शिक्षक की भूमिका

पारंपरिक भूमिका – ज्ञानदाता

मल्हार में भूमिका : सह- अभ्यासी मार्गदर्शक बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने देना।

तृतीय सत्र

तीन दिवसीय नई पुस्तक अभिमुखी कार्यक्रम के तीसरे सत्र का प्रारम्भ श्रीमती शालिनी मैडम के वक्तव्य के साथ प्रारम्भ हुआ. इस सत्र में उन्होंने हिन्दी पुस्तक मल्हार में समाहित जीवन मूल्यों, कला और जीवन कौशल पर विस्तृत चर्चा की. मैडम ने बताया कि छठी से आठवीं तक हिन्दी पाठ्यक्रम में सम्मिलित जीवन मूल्यों, कला और जीवन कौशल का छात्रों के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार की भूमिका है, उसे भी बहुत अच्छी तरह समझाया. विद्यार्थियों में संचार, सहयोग, आत्मविश्वास व नैतिक मूल्यों के विकास से जीवन में क्या लाभ होगें, इनके सहयोग से कैसे वो अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर निकाल सकेंगे और एक बेहतर समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे

सकेंगे.। इस विषय पर भी गंभीरता से बात की. अंत में पूरे सत्र की गतिविधि के लिए श्रीमती नीता मैडम ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए सत्र का समापन किया।

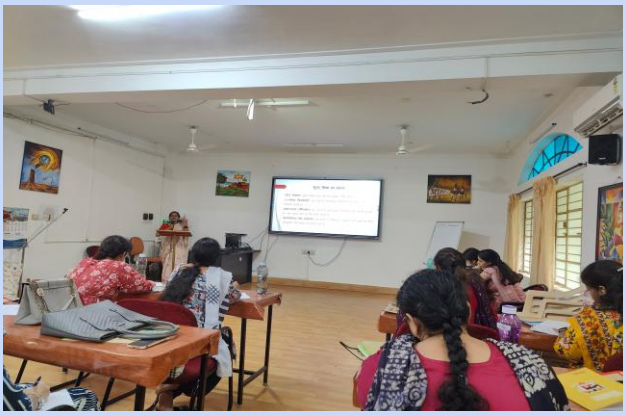

चतुर्थ सत्र

विषय:- नई पाठ्य पुस्तक में डिजिटल (प्रौद्योगिकी) का प्रयोग

प्रस्तुतकर्ता-

दिनेश कुमार प्रौद्योगिकी (ZIET)

शिक्षा में FLN का प्रयोग व NIPUN भारत के अर्थ पर चर्चा,तथा फुल फॉर्म को अच्छे ढंग से अभिव्यक्त किया।नई पाठ्य पुस्तक के उद्देश्य पर चर्चा पहले के एजुकेशन सिस्टम और आपके एजुकेशन सिस्टम में अंतर पर चर्चा। NEP 2020 के 33 पेजों के बारे में बताया आज की पुस्तक और पहले की पुस्तक में अंतर पर चर्चा। इस ओरिएंटेशन के आयोजन के उद्देश्य पर चर्चा मल्हार पुस्तक को पढ़ना कैसे हैं इस पर चर्चा डिजिटल संसार में अंगूठे के प्रयोग पर चर्चा आदि। कार्यशाला के उदेश्य पर विस्तृत एवं प्रभावी चर्चा। और धन्यवाद के साथ सत्र का समापन हुआ इसी के साथ प्रथम दिवस पूर्ण हुआ।

दूसरा दिवस

दूसरे दिन की कार्यशाला का प्रारंभ प्रार्थना सभा के साथ हुआ । प्रार्थना सभा के बाद 22 जुलाई को आयोजित की गई कार्यशाला के विषय में माननीय उपायुक्त महोदया सुश्री मीनाक्षी जैन द्वारा

प्रतिभागियों से प्रतिपुष्टि ली गई और उपायुक्त महोदया द्वारा मल्हार पुस्तक से संबंधित विभिन्न प्रकार के सुझाव प्रतिभागियों को दिए गए

प्रथम सत्र

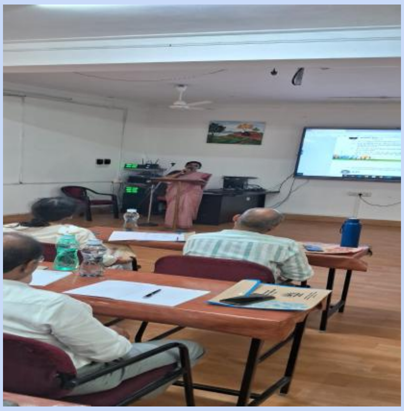

कार्यशाला के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में श्रीमती शालिनी जी ने हिन्दी पाठ्यपुस्तक मल्हार के भाव, भाषा और अभिव्यक्ति के विषय में विस्तार से बताया । उन्होंने बताया कि इन पुस्तकों में दिए गए पाठों के माध्यम से विद्यार्थियों में किस प्रकार मानवीय गुण, संस्कृति और रचनात्मक अभिरुचि उत्पन्न कर सकते हैं। संचालक महोदया ने अपने अनुभव के आधार पर पाठ्यपुस्तक में अंकित सभी पाठों को सरल ढंग से बच्चों को समझाने हेतु कई उपाय बताए। प्रतिभागियों ने भी पठन-पाठन प्रक्रिया के अपने अनुभव साझा किए।

द्वितीय सत्र

कार्यशाला के दूसरे सत्र में विभिन्न शिक्षकों ने इस कार्यशाला से प्राप्त अनुभव और मार्गदर्शन के आधार पर पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मैसूर में विभिन्न कक्षाओं में शिक्षण कार्य किया। अपने शिक्षण के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करके शिक्षण प्रक्रिया को रुचि कर बनाया विद्यार्थियों को शिक्षण के दौरान पाठ के माध्यम से व्यवहारिक जीवन से जोड़ा गया । बाल केंद्रित शिक्षण विधि का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों से विभिन्न प्रकार की गतिविधियां करवाई गई। सभी कक्षाओं में विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भागीदारी की।

तृतीय सत्र

तृतीय सत्र में संसाधक महोदया श्रीमती आरती राठौर द्वारा विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता का विकास करने के लिए कल्पना की उड़ान नामक सत्र का आयोजन किया गया l विचार और कल्पना से विद्यार्थियों को गतिविधि द्वारा उनके सपनों को वास्तविक जीवन से जोड़ना सिखाया l

यह सत्र बेहद रोमांचकारी रहा l आरती मैडम के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सभी प्रतिभागियों ने अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार दिए l “कल्पना की उड़ान” का यह सत्र मल्हार पुस्तक में पूछे गए अनुमान और कल्पना के प्रश्नों को हल करने में काफी हद तक सहायक सिद्ध होगा l

चौथे सत्र का प्रारंभ कार्यशाला की सह निदेशिका श्रीमती पिंकी देवी द्वारा किया गया l इस सत्र में उन्होंने हिंदी पाठ्य पुस्तक में सीखने सिखाने की अनोखी यात्रा पर विस्तृत चर्चा की l मल्हार पुस्तक में दी गई रचनाओं का कक्षा- कक्ष में किन-किन शिक्षण रणनीतियों द्वारा विद्यार्थियों में समझ और आलोचनात्मक सोच द्वारा आत्मसात करने जैसी दक्षता विकसित करने पर चर्चा की l

महोदया ने बताया कि मल्हार पुस्तक को बाल केंद्रित रखते हुए साहित्य की सभी विधाओं को शामिल किया गया है l बाल मन को ध्यान में रखते हुए रोचक और जीवंत सामग्री तैयार की गई l नई पाठ्यपुस्तक में दिया गया अभ्यास कार्य छात्रों की सहभागिता को बढ़ाता है, उन्होंने बताया कि नई पाठ्य-पुस्तकों में हिंदी भाषा का अन्य विषयों के साथ अंतः सहसंबंध स्थापित किया गया है l

तीसरा दिवस

केंद्रीय विद्यालय संगठन शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान मैसूरु में समाप्त हुए हिन्दी विषय की नई पाठ्यपुस्तक पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम (हिंदी) त्रिदिवसीय प्रशिक्षण के अंतिम दिवस गुरुवार 24 जुलाई 2025 के दिवस की कार्यशाला की शुरुआत शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान मैसूरु की उपायुक्त एवं कार्यशाला की निदेशिका महोदया सुश्री

मीनाक्षी जैन जी की उपस्थिति में प्रार्थना सभा एवं विशेष कार्यक्रम के साथ हुई। कार्यक्रम में आगे मधुरभाषिणी,मातृवत्सला,आदरणीया मैडम निदेशिका सुश्री मीनाक्षी जैन मैम ने प्रशिक्षु अध्यापकों से स्वास्थ्य एवं सुविधाओं को पूछते हुए प्रशिक्षुओं द्वारा कल लिए गए कक्षाओं पर उनके अनुभव को सुना और अपनी एक रिफ्लेक्टिव डायरी, लर्नर डायरी तथा कक्षा शिक्षण के लिए प्लान बी और कक्षा-कक्ष में शिक्षण के बाद अध्यापक को आत्मचिंतन करना जैसे उत्तम सुझाव और मार्गदर्शन दिए।

आगे आदरणीया मैम मीनाक्षी जी ने मास्टर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए पांच महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए गए जिनमें अध्यापक साथियों को एक सुविधाप्रदाता की तरह ट्रेंड करने, बॉडी लैंग्वेज,व्यवहार आदि के द्वारा साथ-साथ पढ़ने व सीखने के भावना ,सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में साथी शिक्षकों से ज्यादा से ज्यादा उत्तर की प्राप्ति हो सके तथा प्रशिक्षक के तौर पर हर सीखने वाले साथी के साथ प्रयास ऐसा हो कि सभी बोलें और सबसे महत्वपूर्ण सीखने वाले सभी साथियों को यह लगे यह उनकी लर्निंग है उन्हें सिखाया नहीं गया है। इसी में आगे ट्रेनिंग के मुख्य उद्देश्य को भी उन्होंने रेखांकित किया कि किसी ट्रेनिंग का उद्देश्य व्यवहार और मनोवृति में परिवर्तन लाना है।

प्रथम सत्र

तीसरे दिन के **प्रथम सत्र** की सह निदेशिका श्रीमती पिंकी देवी ने शुरुआत करते हुए मूल्यांकन की परिभाषा जिसमें विद्यार्थी के प्रगति मापन और उपचारात्मक शिक्षण तथा मूल्यांकन के उद्देश्य जैसे-शिक्षक की गुणवत्ता को समझना, सीखने की गति और शैली का विश्लेषण, विद्यार्थियों की कमजोरी और क्षमता की पहचान आदि महत्वपूर्ण उद्देश्यों पर चर्चा की। इसी दौरान मैडम ने मूल्यांकन की विशेषताएं जिसमें- सतत और समग्र, निरंतर, न्याय संगत, निष्पक्ष और पारदर्शी, उद्देश्य परक एवं प्रतिक्रिया उन्मुख जैसी विशेषताओं पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई। कार्यशाला में आगे मूल्यांकन की विशेषताओं में सतत और समग्र मूल्यांकन एवं मूल्यांकन के समय भाषा कौशल लक्ष्य (सुनना, बोलना, लिखना और पढ़ना) को प्राप्त करने पर अधिक जोर दिया गया। मैडम ने दक्षता आधारित प्रश्न निर्माण, मूल्यांकन के प्रकारों जिसमें समय के आधार पर, तकनीकी के आधार पर, प्रेषण के आधार पर जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई साथ में गतिविधि आधारित मूल्यांकन पर विशेष रूप से चर्चा की गई और पोर्टफोलियो, वर्कशीट,

साक्षात्कार,परीक्षा प्रश्नावली आदि महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा की। इसी कड़ी में मूल्यांकन के लिए कुछ उपकरणों का प्रयोग करने के लिए बताया गया जिसमें मौखिक, सामूहिक, लिखित और अन्त में मैम ने स्वयं के द्वारा बनाए गए दो प्रश्न पत्रों, प्रश्नों के स्वरूप ,अंक विभाजन के स्वरूप पर भी विस्तार से चर्चा की।

दूसरा सत्र

श्रीमान दिनेश कुमार सर द्वारा तकनीकी ज्ञान जिसमें अनुवाद भाषिणी, मूल्यांकन के लिए गूगल फॉर्म का उपयोग, पुस्तकों में क्यूआर और यूट्यूब लिंक के महत्व तथा ई पाठशाला में अध्यापकों के लिए संसाधन और उसके लाभ एवं प्लीकर्स ऐप जिसके माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन रोचक ढंग से किया जा सकता है, जैसे महत्वपूर्ण तकनीकी ज्ञान पर चर्चा करके सभी प्रशिक्षुओं का ज्ञानार्जन कराया गया।

तीसरा सत्र

कार्यशाला के तीसरे सत्र में सभी प्रशिक्षुओं को केंद्रीय विद्यालय मैसूर में पाठ योजना शिक्षण के लिए ले जाया गया जहां सभी अध्यापकों ने अपने-अपने पाठ योजना को रोचक तरीके से पढ़ाया गया और संसाधिका महोदया द्वारा प्रेक्षण कार्य भी किया गया। इसी दौरान स्कूल की प्राचार्या महोदया ने सभी शिक्षकों को अपने अनुभव साझा करते हुए अपनी रचनात्मकता बनाए रखने का सुझाव और आशीर्वचन देकर अनुगृहित किया ।

चतुर्थ सत्र

कार्यशाला के चोथे सत्र में संसाधिका महोदया श्रीमती शालिनी द्वारा मास्टर प्रशिक्षकों की भूमिका, प्रशिक्षण योजना और कार्यान्वयन रणनीतियों पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई जिसमें प्रशिक्षकों के कार्य उद्देश्य और उत्तरदायित्व जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते हुए प्रशिक्षण योजना किस प्रकार हो और आवश्यकता का आकलन किस प्रकार हो जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालते हुए इस कार्यशाला को रचनात्मक एवं जीवंत बनाने का काम सहायक निदेशिका एवं सभी संसाधकों ने किया। प्रशिक्षण के अमाध्यम से सभी शिक्षकों का भावात्मक,मानसिक ,चारित्रिक, शैक्षणिक एवं शिक्षण विधि व सृजनात्मक विकास हुआ जिससे सभी प्रशिक्षुओं का चहुंमुखी विकास हुआ जो कि भारत के भविष्य नन्हे बच्चों को एक सभ्य व वैश्विक नागरिक बनाने में मदद करेगा। इस त्रिदिवसीय कार्यशाला का सफल समापन शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान मैसूरु की उपायुक्त एवं

कार्यशाला निदेशिका सुश्री मीनाक्षी जैन मैम द्वारा आशीर्वाद और सकारात्मक उत्तरदायित्व देते हुए किया गया।

<u>व्याख्यान</u>

नई पाठ्यपुस्तकों: सीखने-सिखाने की अनोखी यात्रा

श्रीमती पिंकी देवी टीजीटी हिंदी

प्रशिक्षण सह - निदेशक

केंद्रीय विद्यालय वाल्टेयर

नई शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विकसित नई पाठ्यपुस्तकें केवल एक विषयवस्तु नहीं, बल्कि एक जीवंत शैक्षिक यात्रा का आरंभ हैं। ये पुस्तकें बालकों की जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और सोचने की क्षमता को केंद्र में रखकर तैयार की गई हैं। अब शिक्षा केवल पाठ रटने तक सीमित नहीं, बल्कि अनुभवों से सीखने, गतिविधियों में भाग लेने और विचारों को अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया बन गई है। इन पुस्तकों में भाषा को संवाद, सहकार और सृजन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे शिक्षण अधिक अर्थपूर्ण और आनंददायक बनता है। शिक्षक अब ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि एक सहयात्री के रूप में छात्रों के साथ इस अनोखी यात्रा में सहभागी बनते हैं। यह यात्रा केवल सीखने की नहीं, बल्कि बच्चों के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानने, उन्हें दिशा देने और जीवन के लिए तैयार करने की प्रेरक प्रक्रिया है।

"मल्हार" पुस्तक शिक्षण उद्देश्य:

श्रीमती आरती राठौर , संसाधक

टीजीटी हिंदी

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मैसूरु

- ”मल्हार” पुस्तक कक्षा 6, 7 और 8 के लिए नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप तैयार की गई है। इसका उद्देश्य छात्रों को रुचिकर, व्यवहारिक, छात्र-केंद्रित और कौशल आधारित शिक्षा देना है।
- इसमें हिंदी साहित्य और भाषा कौशल (बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना) के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्य, भारतीय संस्कृति, स्थानीयता, और सांस्कृतिक विविधता को भी समाहित किया गया है।
- पुस्तक की सामग्री कहानियाँ, कविताएँ, संवाद, चित्र व गतिविधियों के माध्यम से दी गई है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया मनोरंजक और अनुभवात्मक बनती है।
- यह पुस्तक आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता और रचनात्मकता जैसे 21वीं सदी के जीवन कौशलों को भी विकसित करती है।
- निष्कर्षतः, ”मल्हार” एक आधुनिक और मूल्य-आधारित पाठ्यपुस्तक है जो छात्रों को केवल ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन को समझने और जीने की कला भी सिखाती है।

हिन्दी भाषा में मूल्यों, कला और जीवन कौशल का समावेश

श्रीमती एस एस शालिनी, संसाधक
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय एच ए पी पी

- हिन्दी भाषा में मूल्यों, कला और जीवन कौशल का समावेश एक महत्वपूर्ण पहलू है जो छात्रों को विभिन्न तरीकों से लाभ पहुँचाता है।

- हिन्दी भाषा के माध्यम से नैतिक मूल्यों जैसे सत्य, सहयोग और दया को बढ़ावा दिया जाता है, जो छात्रों के चरित्र निर्माण में मदद करता है।
- हिन्दी साहित्य और भाषा में कला का समावेश छात्रों की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करता है, जिससे वे अपनी भावनाओं और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।
- **जीवन कौशल का समावेश**
- हिन्दी भाषा के माध्यम से संचार, समस्या समाधान और सहयोग जैसे जीवन कौशलों का विकास किया जाता है, जो छात्रों को वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है।

- इस समावेश से छात्रों का समग्र विकास होता है, जिसमें नैतिक मूल्यों का पालन, रचनात्मक अभिव्यक्ति और जीवन कौशलों का विकास शामिल है।

कक्षा 7 हिंदी पाठ्यपुस्तक में भाषा, भाव और सांस्कृतिक जुड़ाव

श्रीमती एस एस शालिनी, संसाधक
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय एच ए पी पी

- भाषा, भाव और सांस्कृतिक जुड़ाव एक महत्वपूर्ण पहलू है जो छात्रों को हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति से जोड़ता है।
- हिन्दी भाषा के माध्यम से छात्रों को भावों की अभिव्यक्ति करने का अवसर मिलता है। पाठ्यपुस्तक में शामिल कविताएँ और कहानियाँ छात्रों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं।
- पाठ्यपुस्तक में भारतीय संस्कृति और परंपराओं के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जो छात्रों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है।
- छात्रों में भारतीय संस्कृति और परंपराओं की समझ विकसित करना।
- छात्रों को भावों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में मदद करना।

अधिगम के लिए मूल्यांकन एवं दक्षता आधारित प्रश्न निर्माण

श्रीमती पिंकी देवी टीजीटी हिंदी
प्रशिक्षण सह - निदेशक
केंद्रीय विद्यालय वाल्टेयर

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत मूल्यांकन को केवल अंक देने की प्रक्रिया न मानकर, अधिगम की गहराई को परखने का एक माध्यम माना गया है। मूल्यांकन अब सतही उत्तरों पर केंद्रित न होकर, विद्यार्थियों की सोचने, समझने, विश्लेषण करने, और अभिव्यक्त करने की वास्तविक क्षमताओं को मापने की दिशा में अग्रसर है। दक्षता आधारित प्रश्न निर्माण इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहाँ प्रश्न इस प्रकार तैयार किए जाते हैं कि वे छात्रों की ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, मूल्यांकन और सृजनात्मकता को उजागर करें। ऐसे प्रश्न बच्चों को पाठ के गूढ़ अर्थ तक पहुँचने, जीवन से जोड़ने तथा भाषा को प्रयोग में लाने के अवसर प्रदान करते हैं। इस प्रकार का मूल्यांकन न केवल अधिगम को सशक्त बनाता है, बल्कि शिक्षकों को भी छात्रों की प्रगति का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है।

कल्पना की उड़ान

श्रीमती आरती राठौर , संसाधक
टीजीटी हिंदी
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मैसूरु

मल्हार पुस्तक में दिए गए पाठ में विचार और कल्पना की महत्ता को रेखांकित किया गया है। विचार हमारे मस्तिष्क की सोचने की शक्ति है, जबकि कल्पना सोच से आगे जाकर कुछ नया रचने की क्षमता है। यह पाठ विद्यार्थियों को अलग ढंग से सोचने, कल्पना करने और अपनी बात को रचनात्मक ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसमें बताया गया है कि चित्र बनाना, कहानियाँ लिखना, नाटक करना जैसी गतिविधियाँ बच्चों की रचनात्मक उड़ान को बढ़ावा देती हैं। शिक्षा में कल्पना बच्चों को सोचने, समझने और जीवनोपयोगी ज्ञान से जोड़ने में सहायक है। मल्हार पुस्तक में दी गई कहानियाँ, कविताएँ और चित्रण बच्चों की कल्पनाशक्ति को प्रेरित करते हैं। बच्चों में कल्पना बढ़ाने के लिए शिक्षकों को कहानी लेखन, कला गतिविधियाँ, भूमिका-निर्वहन तथा "क्या हो अगर..." जैसे प्रश्नों के माध्यम से एक खुला, उत्साहवर्धक वातावरण बनाना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के हर विचार को सम्मान दें और तकनीक का भी उपयोग कर कल्पनाओं को दृश्य रूप दें। अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि कल्पना ही विचारों को दिशा देती है और मल्हार जैसी पुस्तकें विद्यार्थियों को अपने सपनों को उड़ान देने में प्रेरित करती हैं।

"नई पाठ्यपुस्तकों का परिचय एवं अधिगम उद्देश्य"

श्रीमती पिंकी देवी टीजीटी हिंदी
प्रशिक्षण सह - निदेशक
केंद्रीय विद्यालय वाल्टेयर

नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में किया गया है, जिनका उद्देश्य शिक्षण को बाल-केंद्रित, गतिविधि-आधारित एवं अनुभवात्मक बनाना है। ये पुस्तकें केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विद्यार्थियों में सोचने, समझने, प्रश्न करने और अभिव्यक्त करने की क्षमताओं को भी विकसित करती हैं। नई पुस्तकों के माध्यम से भाषा के चारों कौशल–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना–का संतुलित विकास सुनिश्चित किया गया है। अधिगम उद्देश्यों में विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देना, सहयोग एवं सहभागिता की भावना विकसित

करना, स्थानीय परिवेश से जोड़ते हुए सांस्कृतिक मूल्यों की समझ उत्पन्न करना तथा आत्म-अभिव्यक्ति और आत्म-मूल्यांकन की क्षमता का विकास प्रमुख रूप से शामिल है। इन पुस्तकों में शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक व प्रेरक की है, जो बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। कुल मिलाकर, यह नई पहल शिक्षा को जीवनोपयोगी और अधिक व्यावहारिक बनाने की दिशा में एक सार्थक कदम है।

मास्टर ट्रेनर की भूमिका प्रशिक्षण योजना और कार्यान्वयन रणनीति

श्रीमती एस एस शालिनी, संसाधक
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय एच ए पी पी

- मास्टर ट्रेनर अन्य प्रशिक्षकों या शिक्षकों को प्रशिक्षण देते हैं।
- वे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना बनाते हैं और उन्हें प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए रणनीतियाँ तैयार करते है।
- मास्टर ट्रेनर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके प्रशिक्षण को प्रभावी बनाते हैं।
- प्रशिक्षण के स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करता हैं
- प्रशिक्षण में उपयोग की जाने वाली सामग्री और विधियों का चयन करना।
- प्रशिक्षण के दौरान और बाद में निगरानी और मूल्यांकन करना।
- मास्टर ट्रेनर की भूमिका प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करती है।
- मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षकों की क्षमता में वृद्धि करने में मदद करते हैं।

फोटो गैलरी

NCF 2023 के अनुसार हिंदी
पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ

VISION STATEMENT OF PM SHRI SCHOOLS
Galaxy F23 5G

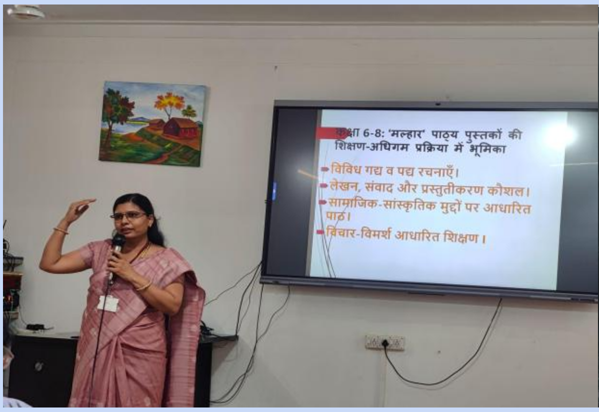
6-8: 'मल्हार' पाठ्य पुस्तकों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भूमिका
विविध गद्य व पद्य रचनाएँ।
लेखन, संवाद और प्रस्तुतीकरण कौशल।
सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर आधारित पाठ।
विचार-विमर्श आधारित शिक्षण।

क्या आप अपने देश से प्रेम करते हैं यदि

समूह चित्र

के.वि.सं
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING
K.V.S.
मैसूर
MYSORE

पीपीटी / पाठ योजना लिंक :

KVS ZIET
https://drive.google.com/drive/folders/1YW1SoSv_DtHmSFxGtN5nCJ_B1slAqh-I?usp=drive_link

संपादकीय दल

	श्री डूंगर सिंह मीणा **टीजीटी हिंदी** **पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कड़पा, हैदराबाद**

	संभाग

धन्यवाद